संस्कृति IAS

सामान्य अध्ययन

एथिक्स

CSE पाठ्यक्रम के अनुरूप

Powered by

Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि

विषय-सूची

इकाई	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1	नीतिशास्त्र और मानवीय सहसंबंध	3-35
2	अभिवृत्ति	36-52
3	सिविल सेवा के लिए अभिरुचि और बुनियादी मूल्य	53-67
4	भावनात्मक बुद्धिमत्ता	68-80
5	भारतीय दर्शन में नैतिकता	81-91
6	पाश्चात्य एवं पूर्वी विचारक	92-103
7	नैतिकता के समसामयिक पहलू	104-111
8	महान नेता, समाज सुधारक एवं प्रशासक	112-115
9	लोक प्रशासन में सिविल सेवा के मूल्य तथा नीतिशास्त्र	116-124
10	शासन व्यवस्था में ईमानदारी	125-132
11	केस स्टडी	133-143
12	नीतिपरक शब्दावली, कथन एवं उद्धरण	144-152

इकाई 1

नीतिशास्त्र और मानवीय सहसंबंध (Ethics and Human Interface)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'नीतिशास्त्र और मानवीय सहसंबंध तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- नीतिशास्त्र की अवधारणा
  - ➤ नीतिशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है
  - ➤ नीतिशास्त्र मानकीय विज्ञान के रूप में
  - ➤ नीतिशास्त्र क्या नहीं है
- नैतिकता
  - ➤ नैतिकता बनाम नीतिशास्त्र
- मूल्य
  - ➤ आधुनिकतावाद और पारंपरिक सामाजिक नैतिक मूल्यों का सामंजस्य
- नीतिशास्त्र और धर्म
- कानून और नीतिशास्त्र
  - ➤ कानून एवं नैतिकता के बीच संघर्ष
- नीतिशास्त्र और सामाजिक मानक
- नीतिशास्त्र और मनोविज्ञान
- राजनीति और नीतिशास्त्र
- नीतिशास्त्र और दर्शन
- नीतिशास्त्र और सिविल सेवा
- नीतिशास्त्र और सद्‌गुण
- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार-तत्त्व
- संकल्प स्वातंत्र्य : स्वामी विवेकानंद का मत
- नैतिक सापेक्षवाद
- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र के निर्धारक
- मानवीय आचरण और मानव चरित्र
- मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र के परिणाम
- नीतिशास्त्र के विविध आयाम
  - ➤ मानकीय नीतिशास्त्र
  - ➤ अधि-नीतिशास्त्र
  - ➤ व्यावहारिक नीतिशास्त्र
  - ➤ नारीवादी नैतिकता
- निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र
  - ➤ निजी जीवन में नीतिशास्त्र
  - ➤ सार्वजनिक जीवन में नीतिशास्त्र
  - ➤ सिविल सेवकों के लिए निजी और सार्वजनिक संबंधों में नीतिशास्त्र की भूमिका
- मानवीय मूल्य
- साधन और साध्य मूल्य
- व्यापक राष्ट्रीय शक्ति की अभिवृद्धि में नीतिशास्त्र एवं मूल्यों की भूमिका
- मानवीय मूल्यों का ह्रास
- मूल्यों को विकसित करने में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की भूमिका
- आधुनिक शिक्षा और मूल्यों का विकास
- सामाजिक कौशल एवं चरित्र के विकास में स्कूलों की भूमिका
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020
- नैतिक चेतना का विकास : लॉरेंस कोहलबर्ग मॉडल

नीतिशास्त्र की अवधारणा (Concept of Ethics)

- नीतिशास्त्र को प्राय: नैतिक दर्शन की संज्ञा दी जाती है। नीतिशास्त्र, दर्शनशास्त्र की ही एक शाखा है जिसमें नैतिकता संबंधी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है। यह दर्शन की अन्य शाखाओं से भी अंतर्संबंधित है। नीतिशास्त्र को यदि सामान्य शब्दों में परिभाषित किया जाए तो यह किसी व्यक्ति के लिए शुभ क्या है और उसे पाने का तरीका क्या होना चाहिए तथा अशुभ क्या है और उसे नकारने का तरीका क्या होना चाहिए, को संदर्भित करता है।
- नीतिशास्त्र अन्य विज्ञानों से भिन्न है। अन्य विज्ञान, जैसे– मनोविज्ञान एक वर्णनात्मक विज्ञान है, जो मानव के व्यवहार का अध्ययन करता है, मानवशास्त्र मनुष्य की प्रकृति एवं उसके क्रियाकलापों का अध्ययन करता है, सामाजिक एवं राजनीतिक विज्ञान व्यक्ति के सामाजिक एवं राजनीतिक संस्थाओं के साथ संबंधों की चर्चा करता है। इसी प्रकार अर्थशास्त्र मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने वाले विभिन्न साधनों की चर्चा करता है। दूसरी ओर, नीतिशास्त्र एक मानकीय विज्ञान है, जो आदर्शों या मानकों की चर्चा करता है। नीतिशास्त्र का संबंध इस बात से है कि किसी व्यक्ति का आचरण किस प्रकार का होना चाहिए, नैतिक होने के लिए व्यक्ति का सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन कैसा होना चाहिए और साथ ही, यह मनुष्य के उन क्रियाकलापों की चर्चा करता है जो सर्वोत्तम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए आवश्यक हैं।
- इस प्रकार नीतिशास्त्र को सभी विज्ञानों का उच्चतम बिंदु भी माना गया है क्योंकि यह अन्य सभी विज्ञानों को व्यवस्थित करते हुए सर्वोत्तम साध्य की प्राप्ति हेतु मनुष्य के व्यक्तित्व को पूर्णता की ओर ले जाता है।
- यह कहना तर्कसंगत होगा कि नीतिशास्त्र की कोई सर्वमान्य परिभाषा नहीं है। हालाँकि, दार्शनिक दृष्टिकोण से नीतिशास्त्र को दो धाराओं में परिभाषित किया गया है। पहला दृष्टिकोण, परिणाम निरपेक्षवादी (Deontological) है तथा दूसरा, उपयोगितावादी (Teleological)।
- परिणाम निरपेक्षवादी दृष्टिकोण से नीतिशास्त्र सिखाता है कि हमें अच्छे कार्य करने चाहिए और यह हमें ऐसा करने के लिए नियम भी प्रदान करता है। फिर भी परिणाम निरपेक्षवादी दृष्टिकोण हमें यह नहीं बताता है कि कोई भी आचरण अच्छा कैसे किया जाए।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 2	अभिवृत्ति (Attitude)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'अभिवृत्ति तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- अभिवृत्ति की प्रकृति
  - सकारात्मक अभिवृत्ति
  - नकारात्मक अभिवृत्ति
  - तटस्थ अभिवृत्ति
- अभिवृत्ति का निर्माण
- अभिवृत्ति की प्रमुख विशेषताएँ
- अभिवृत्ति की संरचना/अवयव
- स्कीमा या सामाजिक संज्ञान
- संज्ञानात्मक विसंगति
- अभिवृत्ति के प्रकार्य
- अभिवृत्ति एवं व्यवहार
- अभिवृत्ति एवं विचार
- अभिवृत्ति, विचार और व्यवहार में संबंध
- भारतीय समाज के संदर्भ में अभिवृत्ति
- सिविल सेवा के संदर्भ में अभिवृत्ति
- सकारात्मक अभिवृत्ति में योगदान करने वाले कारक
- प्रशासन में सकारात्मक अभिवृत्ति का महत्त्व
- नैतिक एवं राजनीतिक अभिवृत्ति
  - नैतिक अभिवृत्ति
  - राजनीतिक अभिवृत्ति
  - राजनीतिक अभिवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारक
  - कमज़ोर नैतिक अभिवृत्ति और भारतीय राजनीति
  - नैतिक एवं राजनीतिक अभिवृत्ति में संबंध
- लैंगिक असमानता और अभिवृत्ति
  - भारत में लैंगिक असमानता के लिए उत्तरदायी प्रमुख कारक
  - बाल विवाह और लैंगिक असमानता
- रूढ़िवादिता बनाम वैज्ञानिकता
- नकारात्मक अभिवृत्ति के रूप में घृणा : विवेक और अंत:करण की संहारक
- घृणा अपराध और मानवीय मूल्यों व मानवाधिकारों का उल्लंघन
- संवैधानिक नैतिकता और सामाजिक नैतिकता का संघर्ष
- सामाजिक प्रभाव
  - सामाजिक प्रभाव को प्रभावी बनाने वाले कारक
  - सामाजिक प्रभाव के प्रकार
  - सामाजिक प्रभाव के उद्देश्य
- धारण या अनुनयन
  - प्रभावी धारण की तकनीक
  - धारण के माध्यम
  - धारण को प्रभावी बनाने के उपाय
- सामाजिक प्रभाव एवं अनुनयन की प्रासंगिकता
- अनुनयन एवं सिविल सेवक
- सामाजिक प्रभाव एवं अनुनयन : वर्तमान संदर्भ

परिचय (Introduction)

- अभिवृत्ति किसी वस्तु, विषय या मुद्दे के प्रति व्यवहार करने अर्थात् प्रतिक्रिया करने के लिए एक सीखी हुई यानी अधिगृहीत की गई प्रवृत्ति या मन:स्थिति है। वस्तु से तात्पर्य उन सभी सजीव और निर्जीव वस्तुओं से है, जो नित्य प्रति हमारे दैनिक जीवन में शामिल हैं। किसी भी वस्तु, विषय या मुद्दे के प्रति सकारात्मक या नकारात्मक या फिर तटस्थ अभिवृत्ति हो सकती है।
- अभिवृत्ति का सीधा संबंध व्यक्ति के उन मनोभावों से है, जो वह अलग-अलग परिस्थितियों में विभिन्न प्रतिक्रियाओं के रूप में अभिव्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, व्यक्ति किसी परिस्थिति विशेष को लेकर सकारात्मक अथवा नकारात्मक प्रतिक्रिया देता है या फिर वह तटस्थ रहता है। यह ध्यान देने योग्य है कि अधिकतर लोगों में या तो सकारात्मक अभिवृत्ति होती है या फिर नकारात्मक।
- अभिवृत्ति, व्यक्ति में मुख्यत: मूल्यों के आधार पर विचारों के बनने और विकसित होने की प्रवृत्ति है, जो अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न रूपों में प्रकट होती है।
- अभिवृत्ति को सकारात्मक संदर्भ में व्यक्ति के विचार, व्यवहार, मूल्य, संवेग, भावनाएँ, विश्वास, ज्ञान एवं शिक्षा इत्यादि और नकारात्मक परिप्रेक्ष्य में पूर्वाग्रह, रूढ़िधारण इत्यादि कारक प्रभावित करते हैं।

अभिवृत्ति की प्रकृति (Nature of Attitude)

अभिवृत्ति की प्रकृति को सामान्यत: तीन रूपों में विभक्त किया जाता है–

सकारात्मक अभिवृत्ति (Positive Attitude)

यह एक व्यक्ति के आशावादी दृष्टिकोण को इंगित करता है। सकारात्मक अभिवृत्ति रखने वाले व्यक्ति अपने जीवन में उन लोगों की तुलना में अधिक प्रसन्न और सफल होते हैं जिनमें इसका अभाव होता है। सकारात्मक नज़रिया हमें दैनिक जीवन के क्रियाकलापों के संपादन में मदद करता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 3
सिविल सेवा के लिए अभिरुचि और बुनियादी मूल्य
(Aptitude and Foundational Values for Civil Services)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'सिविल सेवा के लिए अभिरुचि और बुनियादी मूल्य तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- अभिरुचि या अभिक्षमता
- सिविल सेवकों के लिए अभिक्षमता
- सिविल सेवा में अभिरुचि की भूमिका
  - ➤ अभिवृत्ति बनाम अभिरुचि
  - ➤ अभिरुचि की प्रासंगिकता
- सिविल सेवा के बुनियादी मूल्य
  - ➤ नोलन समिति : सार्वजनिक जीवन के सात आधारभूत सिद्धांत
  - ➤ सत्यनिष्ठा
  - ➤ जवाबदेही
  - ➤ निष्पक्षता और गैर-तरफदारी या राजनीतिक तटस्थता
  - ➤ लोक सेवा के प्रति समर्पण
  - ➤ समानुभूति या परानुभूति
  - ➤ करुणा
  - ➤ सहिष्णुता
  - ➤ वस्तुनिष्ठता
  - ➤ प्रतिबद्धता
  - ➤ अनामता
  - ➤ समग्र क्षमता
  - ➤ दृढ़ता
  - ➤ समाज और राष्ट्र के प्रति सेवा भावना
  - ➤ निष्ठा, साहस एवं धैर्य
- करुणामय नेतृत्व
- सिविल सेवा के बुनियादी मूल्यों की प्रासंगिकता
- सोशल मीडिया का उपयोग और सिविल सेवा के आधारभूत मूल्यों पर प्रश्नचिह्न

अभिरुचि या अभिक्षमता (Aptitude)

- अभिरुचि का संबंध व्यक्ति की उन योग्यताओं से है जिसके आधार पर वह किसी क्षेत्र विशेष में सफल होने के लिए स्वयं में कुशलता, निपुणता और क्षमता का विकास करता है। इस प्रकार अभिरुचि को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं–

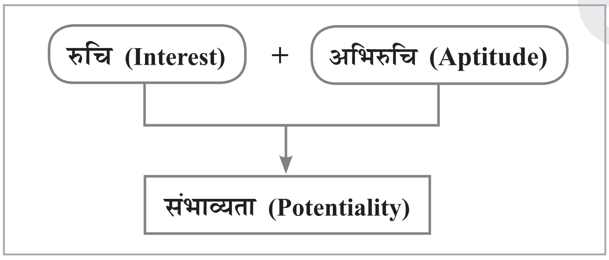

  - ➤ परोक्ष रूप से यह व्यक्ति के आनुवंशिक कारकों पर निर्भर करती है।
  - ➤ यह व्यक्ति के किसी कार्य को विशेष ढंग से करने का परिचायक है।
  - ➤ यह व्यक्ति की प्रदर्शन क्षमता से संबंधित है।
  - ➤ यह व्यक्ति की संभाव्यताओं (Potentialities) से संबंधित है।
  - ➤ सामान्यत: मनुष्य की जन्मजात योग्यता अथवा क्षमता से संबंधित है।
- प्रत्येक व्यक्ति की अभिरुचि का स्तर अलग-अलग होता है। किसी व्यक्ति में बुद्धिमत्ता का तो किसी में व्यावहारिकता का स्तर अधिक हो सकता है। यह भी संभव है कि किसी अन्य व्यक्ति में धैर्य, संकल्प, दृढ़ता, परिश्रम इत्यादि की अधिकता हो। इस प्रकार अभिरुचि का संबंध जन्मजात क्षमता अथवा योग्यता के आधार पर विभिन्न संदर्भों और परिस्थितियों में व्यक्ति के विशेष प्रदर्शन से है।

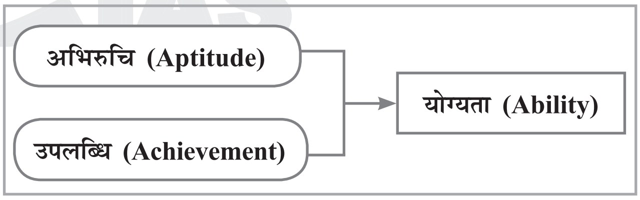

- उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति प्रशिक्षण के माध्यम से संगीत का आधारभूत ज्ञान प्राप्त कर सकता है। किंतु, उसे संगीत के क्षेत्र में तब तक अपेक्षानुरूप सफलता नहीं मिलेगी जब तक कि उसमें संगीत के प्रति उच्च अभिरुचि की उपस्थिति न हो।
- इस प्रकार, अभिरुचि एक ऐसी योग्यता है, जिसे उचित प्रशिक्षण और मार्गदर्शन के माध्यम से सुधारा तो जा सकता है, लेकिन इसे एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में स्थानांतरित नहीं किया जा सकता है।
- उदाहरण के लिए, क्रिकेट के क्षेत्र में सचिन तेंदुलकर और आधुनिक संगीत के क्षेत्र में ए.आर. रहमान में उच्च अभिरुचि की विद्यमानता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 4

भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भावनात्मक बुद्धिमत्ता तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- अवधारणा
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता से जुड़े महत्त्वपूर्ण बिंदु
  - ➤ क्या भावनाओं में बुद्धिमत्ता ढूँढ़ना तर्कसंगत है
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता से संबंधित विकसित मॉडल
  - ➤ मेयर एवं सेलोवी मॉडल
  - ➤ डेनियल गोलमैन मॉडल
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता, अभिवृत्ति एवं नैतिकता के मध्य संबंध
- भावनात्मक गुणक एवं बुद्धि लब्धि
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं बुद्धि लब्धि के मध्य संबंध
  - ➤ भावनात्मक बुद्धिमत्ता से निर्देशित व्यक्ति/संस्था/प्रशासन की विशेषताएँ
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता के विकास की प्रक्रिया
- मैक्स वेबर का नौकरशाही मॉडल बनाम भावनात्मक बुद्धिमत्ता
- सिविल सेवा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता की आवश्यकता
- सिविल सेवा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता के उपयोग से होने वाले लाभ
- सिविल सेवा में भावनात्मक बुद्धिमत्ता विकसित करने में प्रमुख बाधक तत्त्व
- सिविल सेवा/ प्रशासन में भावनात्मक बुद्धिमत्ता को विकसित करने के तरीके
- सिविल सेवा में स्व-जवाबदेहिता का विकास और भावनात्मक बुद्धिमत्ता
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता का आलोचनात्मक मूल्यांकन
- सापेक्ष भावनात्मक मूल्यों पर आधारित नैतिकता
- कुछ सकारात्मक भावनाएँ
  - ➤ आत्मविश्वास
  - ➤ साहस
  - ➤ जिज्ञासा
- कुछ नकारात्मक भावनाएँ
  - ➤ क्रोध
  - ➤ भय
  - ➤ ऊब या अरुचि
  - ➤ ईर्ष्या

अवधारणा (Concept)

- स्वयं के साथ-साथ दूसरों की भावनाओं या संवेदनाओं को समझने एवं उन भावनाओं या संवेदनाओं का समुचित प्रबंधन करने की योग्यता को ही **भावनात्मक बुद्धिमत्ता** कहते हैं। इसका संबंध परिस्थिति के अनुरूप आचरण करते हुए स्वयं की भावनाओं के प्रबंधन से है।
- भावनात्मक बुद्धिमत्ता, व्यक्ति की स्वयं और दूसरों की भावनाओं की पहचान करने तथा उनको विनियमित एवं प्रबंधित करते हुए उन्हें विचार और कार्य में लागू करने की क्षमता है।
- सरल शब्दों में कहा जाए तो 'प्रभावी आचरण के लिए भावनाओं का बुद्धिमत्तापूर्ण यानी तार्किक और समुचित प्रबंधन ही भावनात्मक बुद्धिमत्ता है'।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता में शामिल हैं–

➤ स्वयं की भावनाओं की पहचान करना।

➤ दूसरों की भावनाओं की पहचान करना।

➤ यह जानना कि भावनाओं का उपयोग कब और कैसे करें।

➤ परिस्थिति के अनुसार भावनाओं में आवश्यक बदलाव करना।

➤ बुद्धि के द्वारा भावनाओं पर नियंत्रण करना एवं उनका प्रबंधन करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता से जुड़े महत्त्वपूर्ण बिंदु (Important Points related to Emotional Intelligence)

- **भावनाओं (Emotions)** एवं **भावनात्मक बुद्धिमत्ता (Emotional Intelligence)** दोनों को अलग-अलग समझने की आवश्यकता है। समाज में मनुष्य अपने विभिन्न आचरणों एवं कार्यों के माध्यम से स्वयं में निहित भावनाओं (Emotions) को अभिव्यक्त करता है। उसके व्यवहार में प्रेम, सुख, आनंद इत्यादि सकारात्मक भावनाओं और ईर्ष्या, द्वेष, अहं इत्यादि नकारात्मक भावनाओं का प्रदर्शन होता है अर्थात् व्यक्ति में निहित भावनाएँ (Emotions) उसके आचरण से परिलक्षित होती हैं।

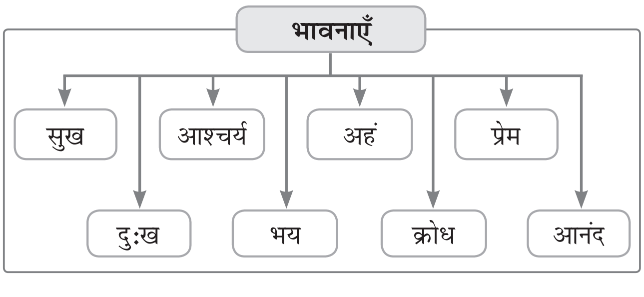

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 5	भारतीय दर्शन में नैतिकता (Ethics in Indian Philosophy)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'भारतीय दर्शन में नैतिकता तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- भगवद्गीता में नैतिकता
  - ➤ निष्काम कर्म : कर्मफल के प्रति आसक्ति का त्याग
- बौद्ध दर्शन में नैतिकता
- जैन दर्शन में नैतिकता
- चार्वाक दर्शन में नैतिकता
- स्वामी विवेकानंद के दर्शन में नैतिकता
  - ➤ स्वामी विवेकानंद का सार्वभौम धर्म
- पुरुषार्थ : मानव जीवन के लक्ष्य
- कौटिल्य के दर्शन में नैतिकता
- महात्मा गांधी के दर्शन में नैतिकता
  - ➤ गांधी के सात सामाजिक पापों की संकल्पना
  - ➤ गांधीवादी नैतिकता और सत्य
  - ➤ साधन एवं साध्य की पवित्रता
  - ➤ सर्वोदय की अवधारणा
  - ➤ महात्मा गांधी : राजनीतिक यथार्थवाद से नैतिक आदर्शवाद का साकार होना
- रबींद्रनाथ टैगोर और आधुनिक विकास की अवधारणा

परिचय (Introduction)

भारतीय दार्शनिक परंपरा में नैतिक चिंतन की एक अनवरत श्रृंखला विद्यमान है। इसे हम वेद, उपनिषद्, गीता, बौद्ध एवं जैन इत्यादि के दर्शन में निहित नैतिक विचारों के माध्यम से देख सकते हैं। ध्यातव्य है कि भारतीय दर्शन में नैतिकता केवल सैद्धांतिक न होकर व्यावहारिक जीवन की पथ-प्रदर्शक भी है। अर्थात्, भारतीय दर्शन में न केवल नैतिक आदर्शों का उल्लेख किया गया है, बल्कि यह मार्ग भी सुझाया गया है कि व्यक्ति किन रास्तों पर चलकर नैतिक व मानवीय आचरण प्रस्तुत कर सकता है। साथ ही, भारतीय नैतिकता केवल व्यक्ति केंद्रित न होकर समाज एवं प्रकृति में मौजूद समस्त प्राणियों के प्रति नैतिक व मानवीय आचरण पर ज़ोर देती है।

भारतीय नैतिक दर्शन की सामान्य मान्यताएँ निम्नलिखित हैं–

- भारतीय दर्शन में **'कर्म नियम की अवधारणा (कर्मवाद)'** अत्यंत प्रासंगिक है। इसके अनुसार, व्यक्ति अपने कर्मों के आधार पर अपने भविष्य का निर्माण करता है। उसके अच्छे कर्म उसे शुभ और बुरे कर्म अशुभ की प्राप्ति कराते हैं। ध्यान देने योग्य है कि बौद्ध दर्शन आत्मा को क्षणभंगुर मानते हुए भी कर्मवाद को स्वीकार करता है। चार्वाक दर्शन के अलावा समस्त भारतीय दार्शनिक संप्रदाय कर्म नियम को मानते हैं।
- भारतीय चिंतन में निहित **'वसुधैव कुटुंबकम्'** की अवधारणा संपूर्ण विश्व को अपना परिवार मानते हुए शोषण, असमानता एवं अन्याय को नकारती है और आधुनिक समाज में मानवीय मूल्यों के आधार पर न्याय एवं समस्त प्राणियों के कल्याण का मार्ग प्रशस्त करती है।
- भारतीय दर्शन की **'सर्वे भवंतु सुखिनः'** की अवधारणा वर्तमान में संपूर्ण विश्व के लिए एक आदर्श मूल्य के तौर पर उपस्थित है, जो मानवतापूर्ण आचरण के लिए एक प्रेरणादायी भूमिका में है।
- भारतीय चिंतन परंपरा में लोक कल्याण के लिए त्यागपूर्ण व संयमित जीवन जीने की परिकल्पना की गई है। ईशावास्योपनिषद् में वर्णित **'तेन त्यक्तेन भुन्जिथाः' (त्याग के साथ उपभोग)** की संकल्पना भौतिक आनंद की जगह आध्यात्मिक सुख की बात करती है, जो आधुनिक उपभोक्तावादी समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।
- इसका व्यावहारिक रूप हमें महात्मा गांधी के **'न्यासिता के सिद्धांत'** में देखने को मिलता है। इसी संदर्भ में पाश्चात्य दार्शनिक अरस्तू का यह कथन अत्यंत प्रासंगिक है कि "शत्रुओं को जीतने वाले की अपेक्षा मैं स्वयं की इच्छाओं का दमन करने वाले को अधिक साहसी मानता हूँ"।
- उपनिषदों में **'प्रेय एवं श्रेय'** की अवधारणा प्रस्तुत की गई है। प्रेय एवं श्रेय, लोगों के जीवन जीने के लिए दो मार्ग हैं। प्रेय मार्ग लोगों को सांसारिक सुख की ओर ले जाता है। वहीं, श्रेय मार्ग मनुष्य को नित्य एवं आनंदस्वरूप परमात्मा की ओर ले जाता है। ध्यातव्य है कि उपनिषदों में श्रेय मार्ग को श्रेष्ठ मार्ग माना गया है।
- **'असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय'**, वृहदारण्यक उपनिषद् की प्रसिद्ध उक्ति है। यह लोगों को असत् से सत् की ओर एवं अंधकार से प्रकाश की ओर चलने का निर्देश देती है। इस प्रकार, लोगों को सदाचार के मार्ग पर चलने की प्रेरणा मिलती है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 6 — पाश्चात्य एवं पूर्वी विचारक (Western and Eastern Thinkers)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'पाश्चात्य एवं पूर्वी विचारक तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- सोफिस्ट
- सुकरात
  - सद्गुण ही ज्ञान है और ज्ञान ही सद्गुण है
- सद्गुण नीतिशास्त्र
- प्लेटो
  - सद्गुण सिद्धांत
  - न्याय का सिद्धांत
  - साहस वह सद्गुण है जो यह सिखाता है कि भय अस्तित्वविहीन है- प्लेटो
- अरस्तू
  - सद्गुण या सर्वोच्च शुभ का स्वरूप
  - स्वर्णिम मार्ग सिद्धांत
- कांट का परिणाम निरपेक्ष नीतिशास्त्र
  - परिणाम निरपेक्ष नीतिशास्त्र
  - कांट का मत
  - नैतिकता की पूर्वमान्यताएँ
- परिणाम सापेक्ष नीतिशास्त्र एवं सुखवाद
  - परिणाम सापेक्ष नीतिशास्त्र
  - सुखवाद
  - बेंथम का उपयोगितावाद
  - जे.एस. मिल का उपयोगितावाद
  - लिंग समानता के पक्ष में जे.एस. मिल के विचार
- आत्मपूर्णतावाद या आदर्शवाद
  - हीगेल
  - ब्रैडले
  - कन्फ्यूशियस
  - टी.एच. ग्रीन
- जॉन रॉल्स का न्याय सिद्धांत
  - जॉन रॉल्स के न्याय सिद्धांत का विश्लेषण
- थॉमस हॉब्स का मनोवैज्ञानिक स्वार्थवाद
- एयन रैंड का नैतिक स्वार्थवाद
- सार्त्र की अस्तित्ववादी नैतिकता
- जॉन लॉक
  - नैतिक जीवन
  - प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धांत
- पीटर सिंगर
  - अकाल, समृद्धि और नैतिकता
  - जानवरों के प्रति नैतिक व्यवहार
- मैक्स वेबर
  - सत्ता का सिद्धांत
  - नौकरशाही सिद्धांत

सोफिस्ट (Sophists)

सोफिस्ट विचार परंपरा में प्राचीन मान्यताओं पर संदेह करते हुए उनका खंडन किया गया है। अर्थात्, इसमें अंधविश्वास की समाप्ति एवं तर्क व विवेक की शुरुआत होती है। सोफिस्ट विचारकों द्वारा प्रस्तुत नीतिशास्त्रीय मत निम्नवत् हैं—

- सोफिस्टों ने नैतिकता की आत्मनिष्ठ या सापेक्षतावादी अवधारणा को स्वीकार किया है। प्रमुख सोफिस्ट प्रोटागोरस का कथन है कि **'मनुष्य ही सभी वस्तुओं का मानदंड है'**। यहाँ, मनुष्य का आशय व्यक्ति विशेष से है।
- व्यक्ति विशेष ही नैतिकता की कसौटी है। नैतिकता के निर्धारण का कोई सार्वभौम आधार नहीं है।
- व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं के अनुसार नैतिक नियम बनाता है तथा देश, काल एवं परिस्थिति के अनुसार उनमें परिवर्तन करता है।
- कोई भी आचरण अथवा कार्य अपने-आप में शुभ-अशुभ या सही-गलत नहीं है, व्यक्ति विशेष की भावनाएँ उन कर्मों को वैसा बनाती हैं।
- व्यावहारिक जगत की वस्तुओं की तरह ही नैतिकता एवं सद्गुण को भी जीवन में मिलने वाली सफलता या आनंद प्राप्ति का माध्यम माना जाना चाहिए।

सुकरात (Socrates)

- 'पाश्चात्य नीतिशास्त्र का जनक' सुकरात को ही माना जाता है। उनके द्वारा दिए गए नैतिक विचारों को उनके शिष्य प्लेटो ने अपनी किताबों 'Phaido' एवं 'The Apology of Socrates' के माध्यम से प्रस्तुत किया है।
- सुकरात के अनुसार, नैतिकता किसी व्यक्ति विशेष की भावनाओं और इच्छाओं पर निर्भर नहीं हो सकती, बल्कि मनुष्य होने के नाते वह सभी मनुष्यों पर समान रूप से लागू होती है।
- सुकरात के नैतिक दर्शन का मुख्य उद्देश्य सत्य की खोज करना है। सत्य की खोज में वे ज्ञान को प्राथमिकता प्रदान करते हैं। इस संदर्भ में उनका यह कथन अत्यंत प्रासंगिक है— 'Know Thyself' अर्थात् 'स्वयं को जानो।' सुकरात का यह कथन स्वयं को जानते हुए व्यक्ति को उचित एवं अनुचित के निर्धारण हेतु मार्गदर्शन प्रदान करता है।
- सुकरात के अनुसार, सच्चा सुख व्यक्ति के अच्छे कर्मों का परिणाम है और उसके बुरे कर्म दु:ख में परिणत होते हैं।
- उनके अनुसार, कोई भी मनुष्य दु:खी होने की इच्छा नहीं रखता और न ही दुर्गुणी होना उसकी इच्छाओं पर निर्भर है। इस प्रकार सुकरात का नैतिक चिंतन दु:ख को अवांछनीय बताते हुए इसके लिए अज्ञान को उत्तरदायी मानता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 7	नैतिकता के समसामयिक पहलू (Contemporary Aspects of Morality)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'नैतिकता से संबंधित विभिन्न समसामयिक पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- युद्ध की नैतिकता
  - ➤ संदर्भ
  - ➤ युद्ध की नैतिकता से क्या तात्पर्य है
  - ➤ युद्ध में नैतिकता की क्या भूमिका है
  - ➤ क्या युद्ध नैतिक रूप से उचित है
- विधि द्वारा शासन बनाम विधि का शासन तथा संवैधानिक नैतिकता
  - ➤ संवैधानिक नैतिकता और इसका अनुरक्षण
- साइबर स्पेस से जुड़े नैतिक मुद्दे : उपयोगितावाद बनाम परिणाम निरपेक्षवाद
- मीडिया में नैतिकता
  - ➤ संदर्भ
  - ➤ प्रमुख बिंदु
  - ➤ मीडिया से जुड़े आधारभूत मूल्य
  - ➤ निष्कर्ष
- महामारी के दौर में नैतिक द्वंद्व और चिकित्सा नैतिकता
  - ➤ संदर्भ
  - ➤ नैतिक द्वंद्व
  - ➤ नैतिक द्वंद्व और उपयोगितावादी नैतिकता
  - ➤ कोविड-19 से मिलने वाली सीख
  - ➤ आगे की राह
- कोविड-19 के लिए टीकाकरण संबंधी नैतिकता
  - ➤ संदर्भ
  - ➤ कोविड-19 का अनिवार्य टीकाकरण: संबंधित नैतिक मुद्दे
  - ➤ टीकाकरण के विरुद्ध नैतिक तर्क
  - ➤ टीकाकरण के संबंध में भारत का पक्ष
  - ➤ निष्कर्ष

युद्ध की नैतिकता (Ethics of War)

संदर्भ (Context)

किसी भी आचरण या व्यवहार के संदर्भ में एक दृष्टिकोण यह है कि साधन सर्वोपरि महत्त्व के होते हैं अर्थात् लक्ष्य प्राप्ति के लिए प्रयुक्त साधन नैतिक या उचित होने चाहिए। वहीं, दूसरा दृष्टिकोण यह है कि परिणाम यानी साध्य (Ends), साधनों (Means) को उचित सिद्ध करते हैं। यूक्रेन और रूस तथा इजराइल और फिलिस्तीन के मध्य छिड़े युद्ध की पृष्ठभूमि में इन नैतिक संकल्पनाओं पर विचार करना अति प्रासंगिक है।

युद्ध की नैतिकता से क्या तात्पर्य है (What is Meant by Ethics of War)

- युद्ध की नैतिकता का उद्देश्य यह तय करने में मदद करना है कि नागरिकों के साथ-साथ राष्ट्र के लिए क्या उचित है और क्या अनुचित। इसका उद्देश्य किसी देश की अंतर्राष्ट्रीय नीतियों से जुड़े मुद्दों को नई दिशा देना तथा वहाँ की सरकार और लोगों के आचरण को मानवता की कसौटी पर परखना है।
- औपचारिक युद्ध संहिताओं के निर्माण में युद्ध संबंधी नैतिकता की महती भूमिका रही है। उदाहरण के लिए, युद्ध संबंधी नैतिकता को ध्यान में रखते हुए ही हेग और जिनेवा अभिसमय को लागू किया गया, जिनमें क्रमशः युद्ध से जुड़े नियमों और युद्ध पीड़ितों को मानवीय सहायता उपलब्ध कराए जाने का प्रावधान किया गया है। साथ ही, युद्धरत सैनिकों के लिए नियमों का प्रारूपण और उनका कार्यान्वयन तथा युद्ध अपराधों के संदर्भ में सैनिकों या अन्य लोगों के लिए दंड आदि का निर्धारण भी किया गया है।

युद्ध में नैतिकता की क्या भूमिका है (What is the Role of Ethics in War)

- युद्ध संबंधी नैतिकता का आधार यह है कि किसी अति भयावह स्थिति को समाप्त करने या रोकने के लिए अंतिम विकल्प के तौर पर युद्ध की ओर बढ़ा जा सकता है। यदि युद्ध में जाने का औचित्य/कारण युद्ध से भी ज़्यादा भयावह या अशुभ स्थिति को रोकने के लिए है, तो हमें उस भयावह स्थिति से होने वाली हानि को रोकने के लिए युद्ध की ओर अवश्य जाना चाहिए।
- कई दार्शनिक इस विचार से असहमत हैं। उनका मानना है कि युद्ध सर्वोत्तम विकल्प होने के बावजूद भी नैतिक रूप से गलत है। इसी कड़ी में इमैनुएल कांट का भी मानना है कि यह दृष्टि मौलिक रूप से नैतिकता के उद्देश्यों के साथ विरोधाभासी है, जैसा कि नैतिकता का मुख्य लक्ष्य लोगों को यह निर्देशित करना है कि उन्हें क्या करना चाहिए।
- यदि कोई नैतिक सिद्धांत हमें यह बताता है कि कभी-कभी हमारे सामने गलत करने के अलावा कोई विकल्प नहीं होता, तो उस सिद्धांत का यह अर्थ होगा कि कभी-कभी एक आदर्श नैतिक कर्ता भी गलत कार्य कर सकता है।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 8	महान नेता, समाज सुधारक एवं प्रशासक (Great Leaders, Social Reformers and Administrators)

इकाई 8: महान नेता, समाज सुधारक एवं प्रशासक
(Great Leaders, Social Reformers and Administrators)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'महान नेताओं, समाज सुधारकों एवं प्रशासकों की उपलब्धियों एवं शिक्षाओं से संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- बाल गंगाधर तिलक
- मौलाना अबुल कलाम आज़ाद
- डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम
- अन्ना हजारे
- अमर्त्य सेन
- वर्गीज कुरियन
- प्रोफेसर एम.एस. स्वामीनाथन
- कबीर
- कमला भसीन
- वी.पी. मेनन
- सी.डी. देशमुख
- ई. श्रीधरन
- टी.एन. शेषन
- एन.एन. वोहरा
- किरण बेदी
- कुछ महत्त्वपूर्ण दृष्टांत

बाल गंगाधर तिलक (Bal Gangadhar Tilak)

पृष्ठभूमि

- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के महत्त्वपूर्ण नेता।
- राजनीतिक जीवन में उग्रता का समर्थन करने से लेकर शांति के आधार पर समझौता करने तक की कला में निपुण व्यक्ति।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व।
- मराठी समाचार-पत्र 'केसरी' और अंग्रेज़ी समाचार-पत्र 'मराठा' की शुरुआत करते हुए ब्रिटिश शासन का विरोध।
- 1897 ई. में प्लेग महामारी से पीड़ित लोगों के लिए चिकित्सा की व्यवस्था।
- अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में एकता और राष्ट्रीयता की भावना का विकास।
- **पुस्तकें:** 'द हिंदू फिलॉसफी ऑफ लाइफ, एथिक्स एंड रिलीजन' इत्यादि।

सीखे जाने वाले महत्त्वपूर्ण मूल्य

- नेतृत्व
- करुणा
- साहस
- समानुभूतिक चिंतन
- सहिष्णुता एवं एकता की भावना

मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (Maulana Abul Kalam Azad)

महत्त्वपूर्ण कार्य

- स्वतंत्रता आंदोलन का नेतृत्व।
- शिक्षा एवं संस्कृति के उत्थान हेतु उत्कृष्ट शिक्षण संस्थाओं की स्थापना।
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान।
- **महत्त्वपूर्ण पुस्तकें:** 'इंडिया विन्स फ्रीडम', 'गुबार-ए-खातिर' इत्यादि।

सीखे जाने वाले महत्त्वपूर्ण मूल्य

- साहस
- नेतृत्व
- वैज्ञानिकता
- दृढ़ता
- तार्किकता

डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम (Dr. APJ Abdul Kalam)

पृष्ठभूमि

- 'मिसाइल मैन ऑफ इंडिया' के उपनाम से प्रसिद्ध।
- भारत के 11वें राष्ट्रपति।

महत्त्वपूर्ण कार्य

- 'अग्नि' और 'पृथ्वी' मिसाइलों के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान।
- भारत में डिज़ाइन और निर्मित प्रथम उपग्रह प्रक्षेपण यान 'एस.एल.वी.-III' के परियोजना निदेशक।
- वर्ष 1998 के भारत के परमाणु हथियार परीक्षण में महत्त्वपूर्ण भूमिका।
- **महत्त्वपूर्ण पुस्तकें:** 'विंग्स ऑफ फायर' और 'इग्नाइटेड माइंड्स'

सीखे जाने वाले महत्त्वपूर्ण मूल्य

- दृढ़ता
- वैज्ञानिक अभिवृत्ति
- समरसता
- समानुभूतिक चिंतन
- बंधुत्व
- नेतृत्व
- सहिष्णुता

अन्ना हजारे (Anna Hazare)

पृष्ठभूमि

- विद्यालयी शिक्षा के दौरान ही भारतीय सेना में भर्ती।
- विवेकानंद, विनोबा भावे और महात्मा गांधी से प्रेरित।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 9 लोक प्रशासन में सिविल सेवा के मूल्य तथा नीतिशास्त्र (Civil Service Values and Ethics in Public Administration)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'लोक प्रशासन में सिविल सेवा के मूल्य तथा नीतिशास्त्र तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति को निर्धारित करने वाले कारक
- लोक प्रशासन में नैतिकता
- लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति एवं समस्याएँ
  - लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति तथा समस्या से संबंधित कुछ अन्य मुद्दे
- सार्वजनिक तथा निजी संस्थानों में नैतिक चिंताएँ
  - नैतिक चिंताएँ
  - नैतिक चिंताओं का समाधान
- सार्वजनिक तथा निजी संस्थानों में नैतिक दुविधाएँ
  - सार्वजनिक संस्थानों में नैतिक दुविधाएँ
  - निजी संस्थानों में नैतिक दुविधाएँ
  - नैतिक दुविधा/संशय का समाधान
- नैतिक मार्गदर्शन के स्रोतों के रूप में विधि, नियम, विनियम तथा अंतरात्मा
  - विधि
  - नियम
  - विनियम
  - अंतरात्मा
- जवाबदेही तथा नैतिक शासन
  - जवाबदेहिता
  - नैतिक शासन
- शासन व्यवस्था में नीतिपरक तथा नैतिक मूल्यों का सुदृढ़ीकरण
- अंतर्राष्ट्रीय संबंधों तथा निधि व्यवस्था (फंडिंग) में नैतिक मुद्दे
- कॉर्पोरेट शासन व्यवस्था
  - शेयरधारक एवं कॉर्पोरेट शासन
  - सरकार एवं कॉर्पोरेट शासन
  - कर्मचारी एवं कॉर्पोरेट शासन
  - जनता या ग्राहक एवं कॉर्पोरेट शासन

लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति को निर्धारित करने वाले कारक (Factors Determining the Status of Ethics in Public Administration)

ऐतिहासिक कारक

- ऐतिहासिक कारक वर्तमान लोक प्रशासन में नैतिकता की स्थिति पर व्यापक प्रभाव डालते हैं। भारत में प्रशासनिक क्षेत्र में अनैतिकता और भ्रष्ट आचरण ऐतिहासिक रूप से देखे जाते हैं। उदाहरण के लिए, मुगल काल के दौरान नज़राना और बख्शीश का प्रचलन था, जो कि रिश्वत का ही एक रूप थे। वहीं, ब्रिटिश शासनकाल में जहाँ एक तरफ लॉर्ड कॉर्नवालिस ने भारतीय प्रशासकों पर अनैतिक आचरण का आरोप लगाया, वहीं दूसरी तरफ ईस्ट इंडिया कंपनी ने ब्रिटिश प्रशासकों पर भी भ्रष्टाचार का आरोप लगाया था।
- प्रशासन में ऐतिहासिक रूप से मौजूद रही अनैतिक गतिविधियों के कारण वर्तमान समाज और प्रशासनिक क्षेत्र में भी भ्रष्टाचार के लिए मूक स्वीकृति देखने को मिल रही है।

सामाजिक कारक

- भारतीय समाज में धन का महत्त्व अत्यधिक बढ़ गया है। भारतीय समाज ने धन के संदर्भ में परिणाम सापेक्षवाद (Teleology) को अपना लिया है।
- धन के संदर्भ में साधन-साध्य की पवित्रता के स्थान पर केवल साध्य की पवित्रता पर ही ध्यान रखा जाता है। साध्य से ही साधन की पवित्रता निर्धारित होती है।
- इस प्रकार, आय अर्जन के साधनों का पवित्र होना अनिवार्य नहीं रह गया है, अर्थात् अनैतिक तरीकों से कमाए गए धन को समाज में स्वीकृति प्राप्त हो गई है।

राजनीतिक कारक

- विभिन्न राजनीतिक तंत्रों, जैसे– लोकतंत्र, राजतंत्र, तानाशाही, केंद्रीकृत, विकेंद्रीकृत आदि के आधार पर प्रशासनिक तंत्रों के नैतिक मूल्यों का विकास होता है।
- उदाहरणत: लोकतंत्र में समानता, बंधुत्व, न्याय तथा राजतंत्र में आज्ञाकारिता जैसे मूल्य विशिष्ट होते हैं।
- भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक दलों के भीतर व्याप्त भ्रष्टाचार का अनुकरण प्रशासन के द्वारा किया जाता है।

आर्थिक कारक

- अल्पविकसित और विकासशील अर्थव्यवस्था में व्याप्त आर्थिक असमानता के कारण इन देशों के लोगों का नैतिक रहना आसान नहीं होता है।
- यही कारण है कि इन देशों के लोगों के साथ-साथ प्रशासन को भी अनैतिक होने के पर्याप्त अवसर मिल जाते हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 10	शासन व्यवस्था में ईमानदारी (Probity in Governance)

इकाई 10 शासन व्यवस्था में ईमानदारी (Probity in Governance)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत 'शासन व्यवस्था में ईमानदारी तथा उससे संबंधित विभिन्न पहलुओं' पर आपकी समझ विकसित होगी।

- परिचय
- लोक सेवा की अवधारणा
- शासन व्यवस्था और ईमानदारी का दार्शनिक आधार
- ईमानदारी के सिद्धांत
- सरकार में सूचना का आदान-प्रदान और पारदर्शिता
  - पारदर्शिता के घटक
  - पारदर्शिता के लाभ
  - प्रशासन में पारदर्शिता हेतु संस्थागत उपाय
- सूचना का अधिकार
- नीतिपरक आचार संहिता
  - नैतिक संहिता : भारतीय परिप्रेक्ष्य
- आचरण संहिता
  - आचरण संहिता के मुख्य तत्त्व
  - लोक सेवक हेतु आचार संहिता की आवश्यकता
  - भारत में लोक सेवकों के लिए आचार संहिता
  - आचरण संहिता नियम, 1969
- नागरिक घोषणा-पत्र
  - नागरिक घोषणा-पत्र क्या है
  - घोषणा-पत्र के घटक एवं इसकी विशेषताएँ
  - घोषणा-पत्र लागू करने के लाभ
  - घोषणा-पत्र के समक्ष उपस्थित चुनौतियाँ
- कार्य-संस्कृति
  - स्वस्थ कार्य-संस्कृति के लक्षण
  - कार्य-संस्कृति के घटक
- सेवा प्रदान करने की गुणवत्ता
  - सेवोत्तम मॉडल
- लोक निधि का उपयोग
  - लोकनिधि के उपयोग के सिद्धांत
- भ्रष्टाचार की चुनौतियाँ
  - भ्रष्टाचार के कारण
  - भ्रष्टाचार के तरीके
  - भ्रष्टाचार को दूर करने हेतु सुझाव

परिचय (Introduction)

- लोक सेवक द्वारा अपने कर्तव्यों का ईमानदारीपूर्वक निर्वहन करना उसके नैतिक आचरण को प्रदर्शित करता है। ईमानदारी के अंतर्गत न्यायनिष्ठा, सत्यनिष्ठा और स्पष्टवादिता जैसे सद्गुणों को सम्मिलित किया जाता है।
- कुशल एवं प्रभावी प्रशासन तथा सामाजिक-आर्थिक विकास हेतु शासन व्यवस्था में ईमानदारी का होना अत्यंत आवश्यक है।
- किसी लोक सेवक के लिए ईमानदार होने का आशय न केवल भ्रष्टाचार से दूर रहना है अपितु सत्यता, जवाबदेयता, पारदर्शिता, तटस्थता जैसे नैतिक मूल्यों का पालन करना भी है। अगर कोई लोक सेवक व्यक्तिगत और सामाजिक मूल्यों के प्रति जागरूक होगा तो उसे कभी भ्रष्ट नहीं बनाया जा सकता है।
- शासन व्यवस्था में ईमानदारी और सत्यनिष्ठा को सुनिश्चित करने हेतु भ्रष्टाचार से मुक्त प्रशासन के विकास के साथ-साथ प्रभावी कानून, नियम और विनियम आधारित सामाजिक जीवन को संचालित करना अति आवश्यक है।

लोक सेवा की अवधारणा (Concept of Public Service)

- लोक सेवाओं को सरकार द्वारा संचालित नागरिक सेवाओं के रूप में जाना जाता है, जो सरकार की योजनाओं और कार्यक्रमों को व्यावहारिक रूप प्रदान करती हैं। अन्य शब्दों में, लोक सेवा से तात्पर्य सरकारी तंत्र की उस शाखा से है, जिसका लक्ष्य कानून बनाना नहीं होता अपितु कानून को क्रियान्वित करना होता है।
- सरकार की कार्यपालिका के दो भाग मंत्री और लोक सेवक होते हैं। लोक सेवक, मंत्रियों के आदेशों का पालन करते हैं तथा उन्हें नीति निर्माण में सलाह प्रदान करते हैं।
- लोक सेवकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे उन सभी कार्यों और दायित्वों को पूर्ण करेंगे, जिन्हें सरकार द्वारा जनहित के उद्देश्य से पूरा करने की बाध्यता होती है।
- लोक सेवकों को नीति निर्धारण, नीतियों का क्रियान्वयन, हस्तांतरित विधान का निर्माण, प्रशासकीय न्यायिक निर्णय आदि कार्य करने होते हैं। इन कार्यों का विस्तृत विवरण इस प्रकार है–

1. नीति-निर्माण एवं निर्धारण (Policy making and Formulation)

- देश की नीतियों के निर्माण एवं निर्धारण का कार्य प्रमुखतया विधायिका के कार्यक्षेत्र में आता है। किंतु, फिर भी लोक सेवक नीति-निर्माण एवं निर्धारण में सक्रिय भूमिका का निर्वहन करते हैं।
- नीति निर्माण के संदर्भ में विशेषज्ञता एवं तकनीकी ज्ञान के अभाव के कारण विधायिका को लोक नीति की जटिलताओं का बोध नहीं हो पाता है। यही कारण है कि विधायिका या मंत्रीगण लोक सेवक की सलाह के आधार पर नीतियों का निर्माण करते हैं।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 11

केस स्टडी (Case Study)

केस स्टडी (Case Study)

1. आप एक राजमार्ग निर्माण परियोजना के विभागीय उप-प्रमुख हैं, जिसकी कुल लंबाई 100 किलोमीटर है और इसके 25 किलोमीटर लंबे खंड पर निर्माण कार्य चल रहा है। इस कार्य के दौरान सड़क के किनारे मौजूद सैकड़ों पुराने एवं विशाल वृक्षों को काटे जाने की योजना है, जिसके पश्चात् सड़क के सौंदर्यीकरण हेतु सुंदर वृक्षों को लगाए जाने का भी निश्चय किया गया है। सौंदर्यीकरण योजना के अंतर्गत ऐसे वृक्ष लगाए जाने की योजना है, जो आकार में छोटे हैं और बेहद शुष्क जलवायु में भी वृद्धि कर सकते हैं। इस योजना पर कम लागत आने के अलावा आकार में छोटे होने के कारण इन वृक्षों के आंधी और तूफानों के दौरान टूटने एवं मार्ग अवरुद्ध होने की समस्या भी नहीं आएगी। लागत एवं अन्य मानकों पर ठीक लगने के कारण आपने इस योजना को अपने स्तर पर मंज़ूरी दे दी है और इस पर कार्य भी शुरू हो चुका है। किंतु, कुछ ही महीनों में आपको यह पता चलता है कि यह वृक्ष इस क्षेत्र की जलवायु के अनुकूल न होने के कारण बहुत जल्दी सूखते जा रहे हैं और इनकी देखरेख में भी अत्यधिक खर्च आ रहा है, जिसके कारण यह सड़क सौंदर्यीकरण योजना काफी महंगी साबित हो रही है। ऐसी स्थिति में आपको इस कार्य हेतु अपनाई गई प्रक्रिया पर संदेह होता है क्योंकि यह एक बड़ी खामी है। इस योजना में सरकारी धन का अत्यधिक दुरुपयोग हो रहा है। इस पूरे मामले का आप अपनी तरफ से जाँच करने का प्रयास करते हैं और अपने वरिष्ठ अधिकारियों से भी इस पर चर्चा करते हैं। किंतु, वरिष्ठ अधिकारी सब कुछ ठीक होने की बात कहकर इस मामले को टाल देते हैं। ऐसी परिस्थिति में आप इस परियोजना को किस प्रकार व्यवस्थित रूप देकर व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करेंगे। तर्कसंगत समाधान प्रस्तुत कीजिए।

2. आप एक ज़िले के मुख्य चिकित्सा अधिकारी के पद पर तैनात हैं। कोविड-19 महामारी के कारण स्वास्थ्य सुविधाओं पर अत्यधिक दबाव है और अस्पताल में जगह न मिलने के कारण कई गंभीर रोगियों को मजबूरन घर पर रहकर इलाज करवाना पड़ रहा है। ऐसे में पर्याप्त चिकित्सा व्यवस्था एवं जानकारी की कमी की वजह से कुछ मरीज़ गैर-तार्किक तरीके से अनावश्यक दवाइयों का उपयोग करना भी शुरू कर दिए हैं। ये दवाइयाँ तत्काल रूप से रोगी को लाभ भी पहुँचा रही हैं, जिसके कारण इन दवाइयों का प्रचलन तेज़ी से बढ़ रहा है, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में हल्के लक्षणों वाले रोगियों ने भी बिना चिकित्सकीय सलाह के इन दवाइयों का उपयोग शुरू कर दिया है। इसी दौरान एक दिन आप एक मेडिकल जर्नल पढ़ते हैं, जिसमें यह साफ-साफ उल्लेख है कि इन दवाइयों के स्वास्थ्य संबंधी दीर्घकालिक गंभीर दुष्परिणाम होने की संभावना है। ऐसी दशा में आप इन दवाओं के उपयोग पर प्रतिबंध लगवा सकते हैं लेकिन ऐसी दशा में मौत का आँकड़ा तेज़ी से बढ़ सकता है। इस परिस्थिति में आप ऐसी कौन-सी रणनीति अपनाएंगे ताकि लोगों को इस संकट से निकाला जा सके।

3. आप एक ज़िले में सहायक पुलिस अधीक्षक के पद पर नियुक्त हैं। एक दिन एक व्यक्ति आपको फोन पर सूचना देता है कि आपके इलाके में किसी होटल में देह व्यापार का धंधा चोरी-छिपे चल रहा है, जहाँ मानव तस्करी के ज़रिए लाई गई लड़कियों का देह व्यापार किया जाता है। जब आप होटल के बारे में और जानकारी प्राप्त करते हैं तो आपको पता चलता है कि यह होटल राजनीतिक रूप से बेहद प्रभावशाली एक स्थानीय नेता का है। इसके बावजूद आप बिना किसी भय के होटल पर छापेमारी करते हैं और आपको वहाँ से कई नाबालिक लड़कियाँ एवं अन्य प्रकार की गैर-कानूनी एवं अनैतिक गतिविधियों के सबूत मिलते हैं। जब आप वहाँ से मिले कुछ दस्तावेज़ों की जाँच करते हैं तो आपको एक डायरी में कुछ अधीनस्थ पुलिस अधिकारियों के नाम एवं उनके फोन नंबर लिखे हुए मिलते हैं। इस कारण आपको संदेह होता है कि पुलिस प्रशासन के कुछ अफसरों की मिलीभगत से ही इतने बड़े स्तर पर गैर-कानूनी कार्य संभव हो रहा था। आप इस मामले में गहरी दिलचस्पी एवं पूरी ईमानदारी से कार्य कर रहे हैं और जाँच लगभग पूरी ही होने वाली है। इसी दौरान आपको वरिष्ठ अधिकारी का यह आदेश आता है कि आपको इस मामले की जाँच से अलग किया जा रहा है और अन्य किसी मामले की जाँच हेतु कार्य करना होगा। ऐसी परिस्थिति में आप किस प्रकार इस समस्या के समाधान हेतु प्रयास करेंगे?
   - आप वरिष्ठ अधिकारी का आदेश मानकर स्वयं को इस मामले से अलग कर लेंगे।
   - आप वरिष्ठ अधिकारी का आदेश मानने से इनकार कर देंगे क्योंकि जाँच लगभग पूरी होने वाली है।
   - आप त्यागपत्र दे देंगे और मीडिया को बुलाकर प्रेस कॉन्फ्रेंस के माध्यम से मामले की जाँच को सार्वजनिक कर देंगे।

   कोई अन्य संभव विकल्प सुझाइए। सभी विकल्पों के गुण-दोषों का उल्लेख करते हुए सबसे अच्छे विकल्प को स्पष्ट कीजिए।

Copyright @ Sanskriti IAS

इकाई 12
नीतिपरक शब्दावली, कथन एवं उद्धरण
(Ethical Terminology, Sayings and Quotes)

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरांत विभिन्न 'नीतिपरक शब्दावलियों, कथनों एवं उद्धरणों' के विषय में आपकी समझ विकसित होगी।

नीतिपरक शब्दावली (Ethical Terminology)

- **सार्वभौमिक मूल्य (Universal Values):** ऐसे मूल्य जो सामाजिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सापेक्ष न होकर सभी के लिए समान रूप से महत्ता रखते हैं। जैसे– सत्य, अहिंसा एवं ईमानदारी इत्यादि मूल्य सभी के लिए समान रूप से स्वीकृत हैं।
- **वस्तुनिष्ठता (Objectivity):** वस्तुनिष्ठता से आशय प्रमाणित और लिखित नियमों एवं तथ्यों के आधार पर निर्णय लेना या कार्य करना है। इस प्रकार के निर्णय या कार्य में निष्पक्षता एवं तार्किकता प्रदर्शित होनी चाहिए अर्थात् किसी भी परिस्थिति के गुण और दोष को ध्यान में रखकर निर्णय लिए जाएँ न कि पूर्वाग्रह से युक्त होकर। एक सिविल सेवक में वस्तुनिष्ठता के मूल्य का होना अत्यावश्यक है।
- **आत्मनिष्ठता (Subjectivity):** यह वस्तुनिष्ठता के ठीक विपरीत अवधारणा है। इसमें कोई भी निर्णय लिखित अथवा स्थापित नियमों के आधार पर न होकर किसी व्यक्ति या निर्णयकर्ता के विवेक पर निर्भर करते हैं।
- **अभिवृत्ति (Attitude):** अभिवृत्ति का संबंध किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना या विचार के संदर्भ में सकारात्मक या नकारात्मक या फिर तटस्थ दृष्टिकोण से है।
- **अभिरुचि (Aptitude):** यह व्यक्ति की किसी क्षेत्र विशेष में योग्यता या दक्षता का द्योतक है। इसके माध्यम से किसी कार्य विशेष में व्यक्ति की निष्पादन क्षमता कैसी है, इसका पता लगाया जा सकता है।
- **सद्‌गुण (Virtue):** यह मानवीय चरित्र की विशेष एवं विवेकपूर्ण स्थिति है। व्यक्ति के जीवन का सर्वोत्तम एवं आधारभूत उद्देश्य क्या होना चाहिए, सद्‌गुण इस संदर्भ में निर्देशित करता है। सद्‌गुण के दो प्रकार हैं– नैतिक एवं बौद्धिक सद्‌गुण। स्व-विवेक के माध्यम से अपने संवेगों पर नियंत्रण रखना नैतिक सद्‌गुण का विषय है। बौद्धिक सद्‌गुण विवेकपूर्ण प्रक्रियाओं को सीखने एवं समझने से संबंधित है।
- **कर्तव्यपरायणता (Devotion to Duty):** यह ईमानदारी, नैतिकता, पूर्ण निष्ठा व समर्पण आदि के आधार पर व्यक्ति द्वारा किसी कार्य या लक्ष्य को उचित तरीके से पूरा करने से संबंधित है।
- **नीति परायणता (Righteousness):** नीति परायणता नैतिक रूप से सही और न्यायोचित होने का गुण है। इसे ईमानदारी का पर्याय माना जा सकता है। भारतीय धर्मों में इसे कर्तव्य की अवधारणा के तौर पर दर्शाया गया है।
- **सत्यनिष्ठा (Integrity):** सत्यनिष्ठा एक व्यापक संकल्पना है जिसमें साहस, विनम्रता, निष्पक्षता, वचनबद्धता, ईमानदारी, न्यायप्रियता इत्यादि सद्‌गुण समाहित हैं। सत्यनिष्ठा किसी व्यक्ति या लोक सेवक की स्वयं से प्रतिबद्धता है, जिससे वह मानवीय मूल्यों पर चलकर आचरण कर सके। इस तरह सत्यनिष्ठा व्यक्ति के अंतःकरण से उत्पन्न होती है।
- **नैतिक जड़ता/निष्ठुर (Apathy):** उच्च उद्देश्यों के प्रति उदासीनता या उत्साह तथा भावनाओं (दया, करुणा एवं प्रेम आदि) की कमी ही नैतिक जड़ता कहलाती है।
- **सहानुभूति (Sympathy):** किसी व्यक्ति को दुःख या पीड़ा में देखकर उसके प्रति दया का भाव उत्पन्न होना ही सहानुभूति है।
- **करुणा (Compassion):** यह समानुभूतिक चिंतन का अगला चरण है। इसमें व्यक्ति कमज़ोर और वंचित वर्गों के प्रति न केवल दया भाव रखता है, बल्कि उनके दुःखों को दूर करने हेतु प्रयत्नशील रहता है।
- **समानुभूति या परानुभूति (Empathy):** दूसरे व्यक्ति के दुःख-दर्द और पीड़ा इत्यादि को स्वयं को उसके स्थान पर रखकर अनुभव करना ही समानुभूति है।
- **अंतःप्रज्ञा (Intuition):** यह किसी बाह्य ज्ञान या तर्क के बिना सहज रूप से कुछ समझने की क्षमता है। इसके माध्यम से व्यक्ति स्वयं के समक्ष उपस्थित विभिन्न विकल्पों में से उचित निर्णय लेते हुए सही विकल्प के चुनाव हेतु क्षमता विकसित करता है।
- **अंतःकरण (Conscience):** यह व्यक्ति में निहित आंतरिक भावना है, जिसके माध्यम से व्यक्ति क्या उचित है और क्या अनुचित, इसकी समझ विकसित करता है। सही और गलत आचरण का निर्धारण होने के पश्चात् व्यक्ति उसे नैतिक अथवा अनैतिक व्यवहार की श्रेणी में रखता है। इस प्रकार अंतःकरण से प्रेरित व्यक्ति अनैतिक कार्यों के लिए स्वयं को उत्तरदायी मानते हुए पश्चाताप का अनुभव करता है।
- **नैतिक द्वंद्व (Ethical Dilemma):** किसी परिस्थिति विशेष में व्यक्ति के समक्ष उत्पन्न ऐसी स्थिति जिसमें उसे दो या दो से अधिक विकल्पों में से किसी एक ही विकल्प का चुनाव करना पड़े। बशर्ते, व्यक्ति के समक्ष उपस्थित विकल्प समान स्तर के हों एवं उनमें नैतिक हितों के टकराव का मामला सामने आ रहा हो।

Copyright @ Sanskriti IAS

संस्कृति IAS

जहाँ एक नहीं, हर शिक्षक है श्रेष्ठ

देश में हिंदी माध्यम से
सामान्य अध्ययन की सर्वश्रेष्ठ टीम

सामान्य अध्ययन

- फाउंडेशन कोर्स (प्रिलिम्स + मेन्स)
- प्रत्येक माह नया बैच आरंभ
- हाइब्रिड कोर्स (ऑफलाइन + ऑनलाइन)

SPECIAL OFFER
9555 124 124

दिल्ली एवं प्रयागराज

वैकल्पिक विषय

इतिहास
वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री अखिल मूर्ति

भूगोल
वैकल्पिक विषय
द्वारा- श्री कुमार गौरव

कार्यक्रम विशेषताएँ
- इतिहास और भूगोल में मानचित्र द्वारा अध्ययन के लिए वैज्ञानिक प्रविधि का प्रयोग
- क्लास के तुरंत बाद प्रत्येक विद्यार्थी की विषय संबंधी शंकाओं का निवारण
- प्रत्येक विद्यार्थी की पर्सनल मेंटरिंग व टेस्ट का मूल्यांकन फैकल्टी द्वारा
- मुख्य परीक्षा में पूछे गए विगत 25 वर्षों के प्रश्नों का उत्तर लेखन अभ्यास

GS EXTENSIVE COURSE Prelims + Mains
- लगभग 650 कक्षाओं का एक्स्टेंसिव स्टडी प्रोग्राम
- AI द्वारा समर्थित अध्यापन प्रविधि का प्रयोग
- प्रत्येक टॉपिक का बेसिक से एडवांस लेवल तक कवरेज

INDIVIDUAL MENTORING
- शॉर्ट नोट्स और सिनॉप्सिस बनाने का प्रशिक्षण
- उत्तर लेखन में सुधार के लिए पर्सनल गाइडेंस
- स्टडी इम्प्रूवमेंट के लिए वन-टू-वन सेशन

PGP — PRELIMS GUIDANCE Programme
- प्रत्येक टॉपिक के लिए महत्त्वपूर्ण करेंट अफेयर्स सिनॉप्सिस
- विगत 13 वर्षों के PYQs में पैटर्न के अनुरूप संपूर्ण पाठ्यक्रम का रिवीज़न

PCS COURSES
- UPPCS फाउंडेशन कोर्स
- BPSC फाउंडेशन कोर्स
- MPPCS फाउंडेशन कोर्स
- RAS फाउंडेशन कोर्स
- UP-RO/ARO

MMP — MAINS MENTORSHIP Programme
- संस्कृति IAS की कोर फैकल्टी द्वारा Daily पर्सनल मेंटरिंग की सुविधा
- चारों प्रश्नपत्रों पर आधारित 70 टेस्ट का Intensive Test Programme

IGP — INTERVIEW GUIDANCE Programme
- एक्सपर्ट के साथ वन-टू-वन सेशन
- DAF एनालिसिस एक्सपर्ट के साथ सीधा संवाद
- इंटरव्यू पैनल द्वारा मॉक इंटरव्यू सेशन्स

CSAT COURSE
- गणित और रीज़निंग का बेसिक से एडवांस लेवल तक Step-by-Step अध्यापन
- कॉम्प्रिहेंशन के प्रश्नों को सटीक और त्वरित ढंग से हल करने के लिए डायनमिक मेथडलॉजी

NCERT COURSE
- प्रत्येक विषय की कक्षा 6 से 12 तक की NCERT पर कक्षानुसार लैक्चर
- NCERT पर आधारित प्रिलिम्स और मेन्स के प्रश्नों पर चर्चा

QAD PROGRAMME
- GS के सभी टॉपिक्स के विगत वर्षों के PYQs पर विस्तृत प्रश्नोत्तर चर्चा
- प्रिलिम्स परीक्षा में जटिल प्रश्नों को सुगमता से हल करने में सक्षम बनाना

CURRENT AFFAIRS Programme
- राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के समसामयिक घटनाक्रमों का विस्तृत कवरेज
- फैकल्टी द्वारा समसामयिक घटनाक्रमों का विषयवार डिस्कशन

Mode of Courses
- Hybrid Course — Offline Classroom & Online Live Stream
- Offline Classroom
- Online Live Stream — 3 साल तक Mobile App पर वीडियो लैक्चर देखने की सुविधा

हेड ऑफिस: 636, भू-तल, डॉ. मुख़र्जी नगर, दिल्ली-110009
प्रयागराज केंद्र: महाराणा प्रताप चौराहा, स्टैनली रोड, सिविल लाइन्स, प्रयागराज, उ.प्र.

sanskritiias.com
Follows us: